दिनांक : .२.२०२०

प्रति,

मा. केंद्रीय गृहमंत्री,

भारत सरकार, नई देहली.

विषय : ‘नागरिकता संशोधन विधि’के विरुद्ध पिछले कुछ दिनों से हिंसक आंदोलन चलाकर सामान्य लोगों को कष्ट पहुंचा रहे शाहीन बाग के धर्मांधों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई की जाए....

महोदय,

नागरिकता संशोधन विधि के विरुद्ध शाहीन बाग परिसर में १५ दिसंबर २०१९ से धर्मांधों का विरोध प्रदर्शन चल रहा है । इसमें प्रमुखता से मुसलमान महिलाओं की संख्या लक्षणीय है । यहां चल रहे आंदोलन में प्रतिदिन राजनेताओंसहित समाज के प्रसिद्ध व्यक्ति एवं तथाकथित वामपंथी विचारवंत जाकर अक्षरशः आग में तेल छिडकने जैसे वक्तव्य देकर आंदोलन की आग को प्रतिदिन भडका रहे हैं । इस आंदोलन का नियोजन करनेवाला ‘जे.एन्.यू.’के पूर्व छात्र शरजील इमाम ने खुलेआम ‘असम को भारत से तोडने में सहायता करना हमारा कर्तव्य है और जब ऐसा होगा, तभी केंद्र सरकार हमारी सुनेगा । इसके लिए रेलगाडियों को बंद करें’, ऐसा वक्तव्य दिया । राष्ट्रवादी कांग्रेस की सांसद सुप्रिया सुळे ने अपने भाषण में वहां की मुसलमान महिलाओं के सामने लव जिहाद , तलाक एवं बुर्का इन सभी बातों के लिए बल देनेवाले वक्तव्य दिए । यहां से ‘देश में सर्वत्र ऐसा आंदोलन करें’, यह निरंतर आवाहन किया जा रहा है; जिसका अर्थ यही है कि इस प्रकार के हिंसक आंदोलन कर देशभर में अराजक फैलाकर देश को अस्थिर करने की बात की जा रही है ।

*** अतः हम इस संदर्भ में निम्नांकित सूत्रों की ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं –**

१. अन्य समय पर महिलाओं को साधारण मानवाधिकार प्रदान करना भी अस्वीकार करनेवाले लोग अब उन्हीं महिलाओं की आड में भावनिक आवाहन करते हुए राष्ट्रविघातक खेल खेल रहे हैं । धर्मांध महिलाएं भी यह मानो उनकी जीवनमृत्यु का ही संघर्ष है, इस पद्धति से बडी संख्या में इस आंदोलन में सहभागी हो रही हैं और ‘इस विधि के कारण कैसे उनके अस्तित्व पर संकट मंडरा रहा है ?’, इसका अच्छा नाटक कर रही हैं । पहले ‘छात्रों’ के नाम पर आरंभित यह आंदोलन महिलाओं और छोटे बच्चों का कैसे बन गया ?’, यह समझ के परे है ।

२. उपलब्ध जानकारी के अनुसार शाहीनबाग परिसर में बडी संख्या में अवैध घुसपैठिए मुसलमान रह रहे हैं । उनमें बांगलादेशी, पाकिस्तानी, अफगानी और म्यानमार के घुसपैठी मुसलमानों के होने की बडी संभावना है ।

३. इस आंदोलन में देशभर के वामपंथी एवं निधर्मीवादी पत्रकार, विचारक, युवा नेता और कलाकार आकर विषवमन कर रहे हैं । जैसे-जैसे यहां आनेवाले ‘वक्ताओं’की संख्या बढती गई, वैसे-वैसे इस आंदोलन की प्रसिद्धि भी बढती गई और सीधे विदेशों की संसदों तक जा पहुंची । कुल मिलाकर अब इस आंदोलन ने जो रूप धारण किया है, उसे देखते हुए ‘विदेशी शक्तियों द्वारा बल प्राप्त वामपंथी और धर्मांधों ने एकत्रित होकर आरंभ किया गया यह आंदोलन हिन्दूबहुसंख्यक भारत के विरुद्ध चलाया जा रहा अंतरराष्ट्रीय षड्यंत्र है’, इस संदेह को पुष्टि मिल रही है ।

४. देश के विविध भागों से और पंजाब से भी देहली के इस आंदोलनकारियों के लिए खाने-पीने के पदार्थों का प्रबंध किया जा रहा है । इस संदर्भ में शाहीन बाग में आंदोलनकारियों को बैठने के लिए प्रतिदिन ५०० रुपए दिए जा रहे हैं, ऐसे भी समाचार मिल रहे हैं । इससे इस आंदोलन के पीछे एक योजनाबद्ध पद्धति चलाई जा रही है, यह ध्यान में आता है ।

५. इसमें पहले अज्ञानी छोटे बच्चों के मुंह में विविध विद्वेषपूर्ण वक्तव्य डालकर भावनिक आवाहन किया गया । इसमें सहभागी महिलाएं भी 'केंद्र सरकार अब उन्हें उनके बच्चोंसहित घर से बाहर निकाल देगी', जैसे अत्यंत झूठे वक्तव्य देकर इस विधि के विरुद्ध अफवा फैलाने और विरोधी वातावरण बनाने का काम कर रही थीं । तत्पश्चात योजनाबद्ध पद्धति से वहां जाकर भडकाऊ वक्तव्य देना और उसके वीडियो प्रसारित करना भी आरंभ हुआ । संक्षेप में कहा जाए, तो 'गोबेल्स नीति'के अनुसार बार-बार झूठ बताने से वह सत्य लगने लगता है', ऐसी स्थिति बनाने में वामपंथी और धर्मांध शाहीनबाग के माध्यम से सफल होते हुए दिखाई दे रहे हैं ।

६. कुछ समाचारवाहिनियों के प्रतिनिधियों को भी आंदोलनस्थल आने से रोका गया । एक महिला पत्रकार के साथ अश्लील भाषा का प्रयोग कर वहां से भगाया गया और उसका पीछा भी किया गया । धर्मांधों ने 'जी न्यूज' के 'कैमरामैन' को अक्षरशः घेरकर उसके साथ धक्कामुक्की की । वहांपर इतनी भयावह घटनाएं और वक्तव्य दिए जा रहे हैं; परंतु देहली पुलिस प्रशासन इसके विरुद्ध कुछ करता हुआ दिखाई नहीं देता ।

७. इस आंदोलन में आंदोलनकारियों ने सडक के अधिकांश भाग पर नियंत्रित स्थापित किया है, साथ ही पुलिस प्रशासन ने वहां पर सुरक्षा प्रतिबंध लागू किए हैं; इसके कारण नागरिकों को यहां से आने-जाने के लिए दोहरा कष्ट हो रहा है । इस प्रकरण में राज्य सरकार मूकदर्शक बनी हुई है ।

८. आंदोलनस्थल से देशभर आंदोलन करने की 'पुकार' दी गई है और इस पुकार को मिल रहा प्रत्युत्तर प्रतिदिन बढता ही जा रहा है । शाहीनबाग के 'मॉडल'को सामने रखकर लगभग प्रत्येक शहर में इस प्रकार का आंदोलन करने की भाषा बोली जा रही है ।

*** अतः इस संदर्भ में हम ये मांगें कर रहे हैं कि,**

१. शाहीनबाग में लगभग २ महीनों से चल रहे इस आंदोलन को चालू रखने के लिए इतना पैसा कहां से आ रहा है, इसकी व्यापक जांच की जाए ।

२. आंदोलनकारियों में 'यह आंदोलन एक प्रकार का 'जिहाद' होने'की भावना उत्पन्न की जा रही है । इसलिए इस आंदोलन के संदर्भ में ठोस और निर्णायक कदम उठाए जाने चाहिएं, अन्यथा 'यह शृंखला किस बडे संकट को आमंत्रण देगी', यह बताना कठिन है । अतः पुलिस प्रशासन यहां के सभी आंदोलनकारियों को खदेड कर इस परिसर को खाली करें और नागरिकों को सामान्य जीवन व्यतीत करने के लिए अनुकूल वातावरण बनाए ।

३. इस आंदोलन में देशविरोधी, समाजविघातक और भडकाऊ वक्तव्य देनेवाले नेता, वक्ता आदि के विरुद्ध अपराध प्रविष्ट कर उनके विरुद्ध कठोर कार्रवाई की जाए ।

आपका विश्वासी,

संपर्क :